

भाव-स्वभाव परिवर्तन

“शंख, चक्र, गदा, पद्मधारी
हरि ओ३म् नमो नारायण निमश्कारनिंग निमश्कारनिंग निमश्कारनिंग।”



मैं ब्रह्म हूँ, ब्रह्मा दा वी ब्रह्म हूँ ।

साडा है सजन राम, राम है कुल जहान ।

विचार ईश्वर आप नूं मान ।

शब्द है गुरु, शरीर नहीं है ।

इसीलिए अपनी पूजा मानता करवानी छोड़ दो ।

मैं ब्रह्म हूँ, ब्रह्मा दा वी ब्रह्म हूँ ।

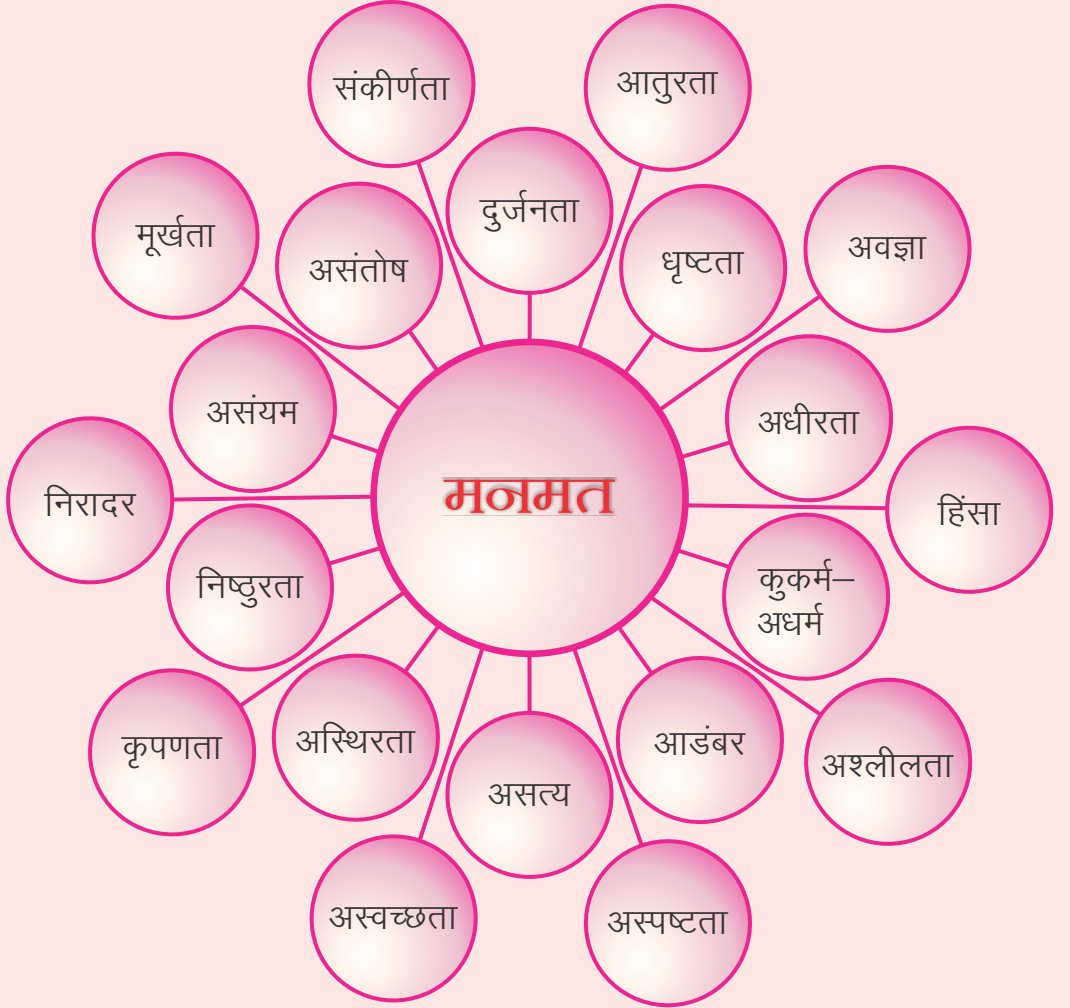


आत्म उत्थान हेतु भाव-स्वभाव में अपनाने योग्य आवश्यक सद्गुण



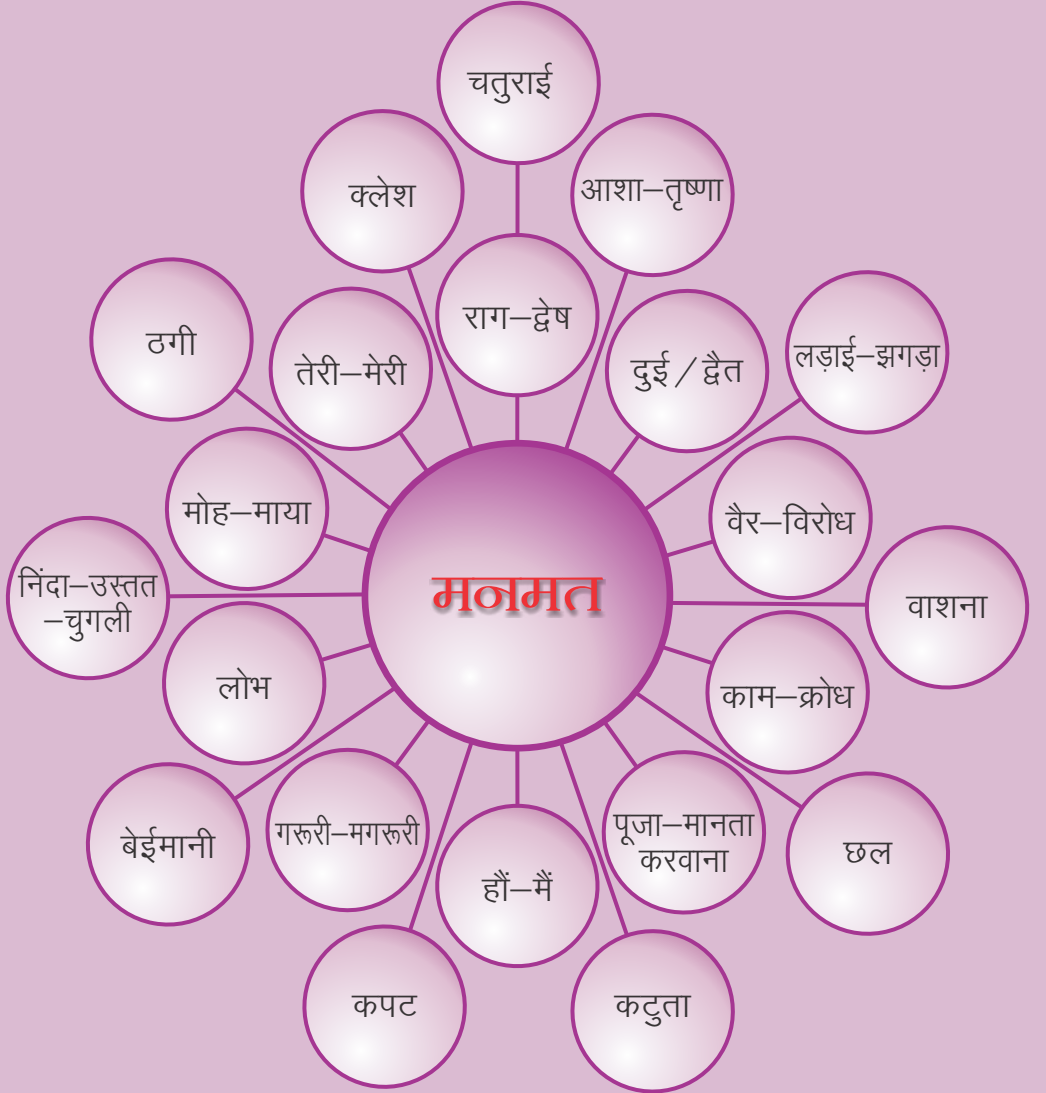
परिणाम-शांति, विश्राम, मोक्ष प्राप्ति अर्थात्
सत् चित् आनंद स्वरूप में स्थिति।

भाव-शुद्धि हेतु त्याज्य अवगुण



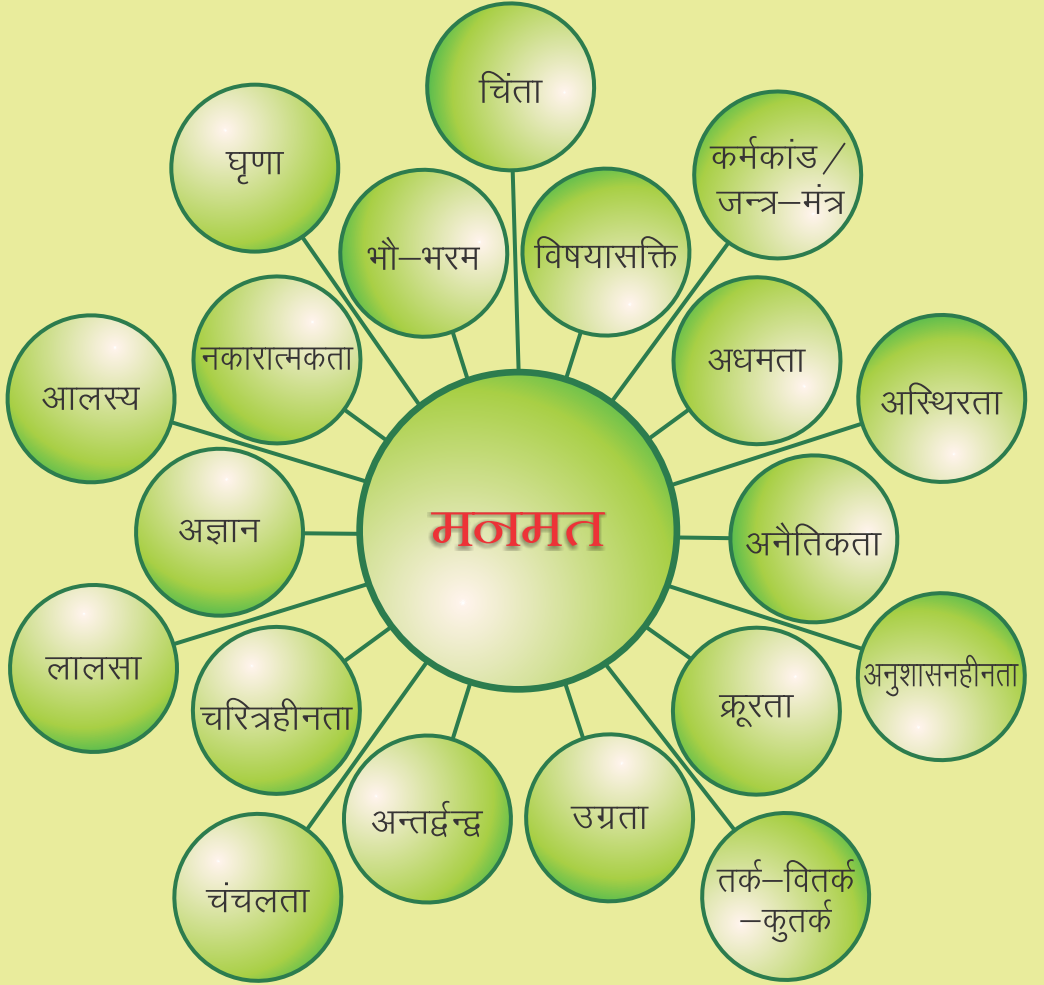
परिणाम-दुःखना-रोना, आधि-व्याधि, क्लेश, विषाद, शोक, पाप, भोग, दुःख, ताप-संताप व जन्म-मरण के चक्रव्यूह में फँस चौरासी भुगतना

भाव-शुद्धि हेतु त्याज्य अवगुण



परिणाम-झुखना-रोना, आधि-व्याधि, क्लेश, विषाद, शोक, पाप, भोग, दुःख, ताप-संताप व जन्म-मरण के चक्रव्यूह में फँस चौरासी भुगतना

भाव-शुद्धि हेतु त्याज्य अवगुण



परिणाम-दुःखना-रोना, आधि-व्याधि, क्लेश, विषाद, शोक, पाप, भोग, दुःख, ताप-संताप व जन्म-मरण के चक्रव्यूह में फँस चौरासी भुगतना

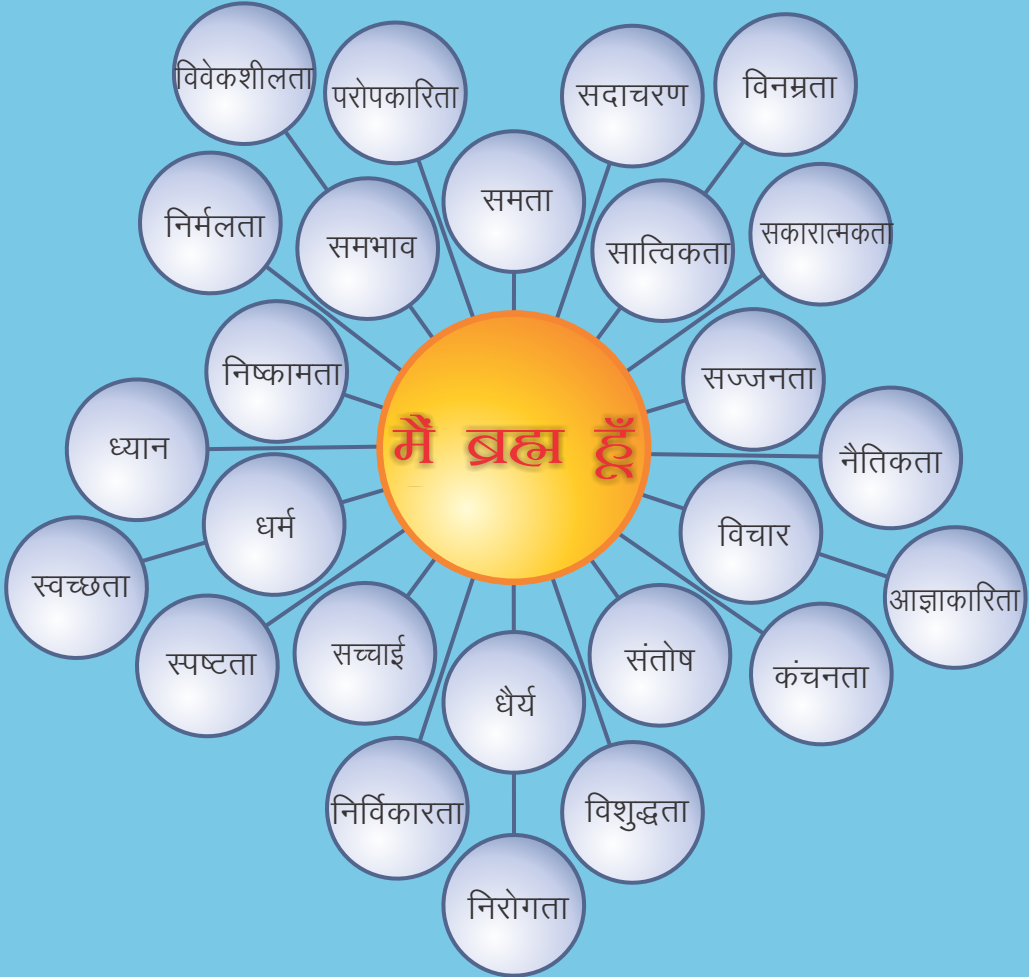
भाव-शुद्धि हेतु त्याज्य अवगुण



परिणाम-दुःखना-रोना, आधि-व्याधि, क्लेश, विषाद, शोक, पाप, भोग, दुःख, ताप-संताप व जन्म-मरण के चक्रव्यूह में फँस चौरासी भुगतना

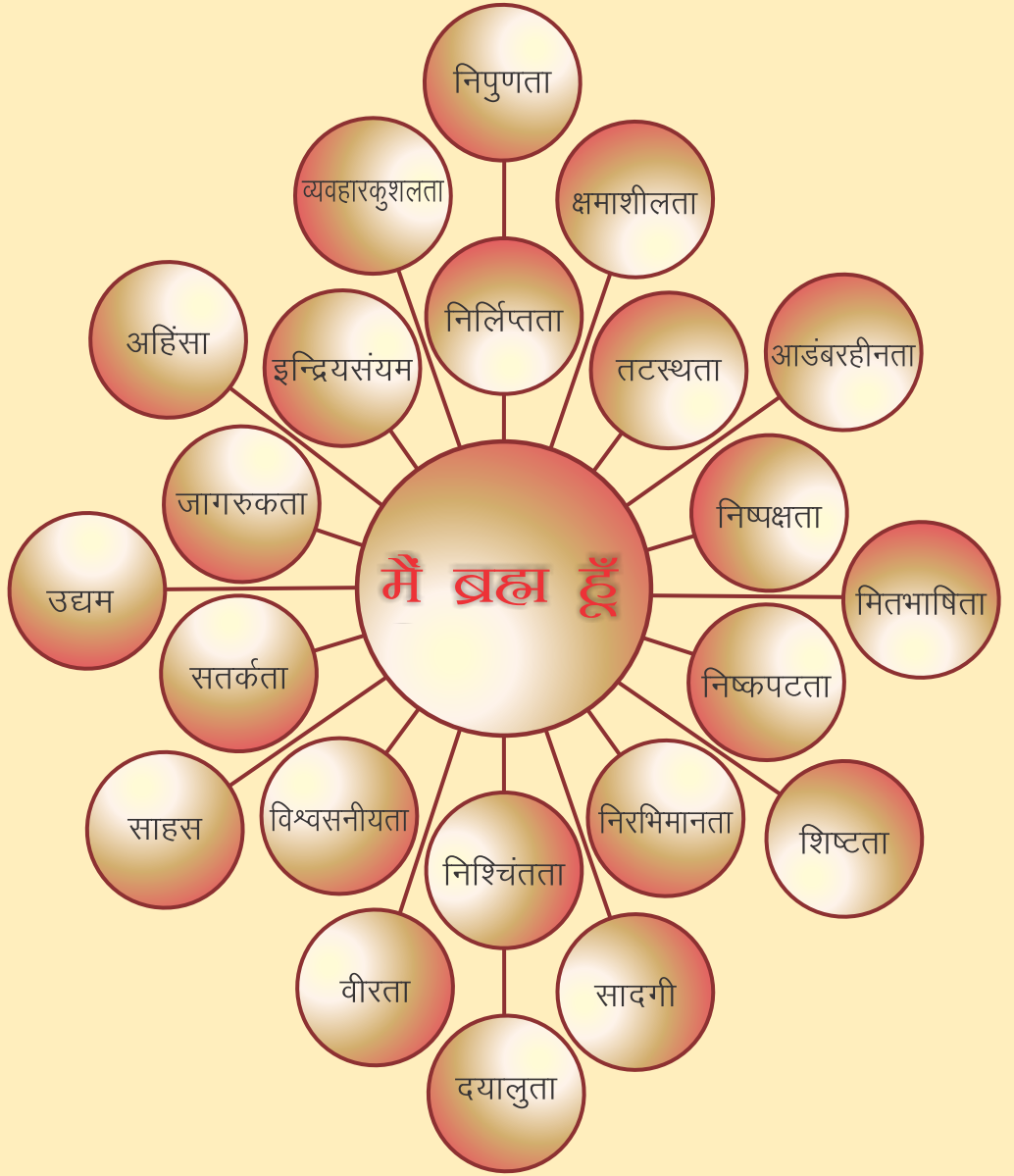


आत्म उत्थान हेतु भाव-स्वभाव में अपनाने योग्य आवश्यक सद्गुण



परिणाम-शांति, विश्राम, मोक्ष प्राप्ति अर्थात्
सत् चित् आनंद स्वरूप में स्थिति।

आत्म उत्थान हेतु भाव-स्वभाव में अपनाने योग्य आवश्यक सद्गुण



परिणाम-शांति, विश्राम, मोक्ष प्राप्ति अर्थात्
सत् चित् आनंद स्वरूप में स्थिति।



“भाव-स्वभाव परिवर्तन”



